सूखा के लिए क्या करें और क्या न करें

क्या करें

- रेडियो सुनें, टीवी देखें और चेतावनी, अपडेट और निर्देशों के लिए समाचार पत्र पढ़ें।
- वर्षा जल संचयन का अभ्यास करें।
- बरसात से पहले स्थानीय जल निकायों की मरम्मत और कायाकल्प करना।
- भूजल तालिका को बढ़ाने में मदद करने के लिए गहरे गड्ढे खोदें।
- जल संरक्षण कार्यक्रमों में भाग लेना।
- घास और पौधों को पानी देने के लिए घरेलू पानी का इस्तेमाल करें।
- नहाने के लिए शॉवर की जगह बाल्टी का इस्तेमाल करें।
- बहते पानी का उपयोग करने के बजाय फर्श को साफ़ करने के लिए गीले कपड़ों का उपयोग करें।
- फ्लशिंग के लिए कम पानी की आवश्यकता वाले शौचालयों का निर्माण।
- रिसाव को रोकने के लिए टैंक, नल आदि की नियमित जांच करें।
- जितना संभव हो पानी का पुन: उपयोग करें।
- जीवन शैली में जल संरक्षण प्रथाओं का अनुकूलन । पानी के उपयोग पर सभी राज्य और स्थानीय प्रतिबंधों का पालन करें, भले ही आपके पास एक निजी कुआँ हो (भूजल स्तर सूखे से भी प्रभावित होता है)।
- सुबबुल, लेज़रुबा, कसूरीना, और नीलगिरी के साथ वनीकरण का प्रोत्साहन।
- जेट्रोफा और पोंगोमिया जैसे जैव डीजल वृक्षारोपण को बढ़ावा देना।

क्या न करें

• पानी बिल्कुल भी बर्बाद न करें।

• पेड़ों और जंगलों को न काटें।

• छतों आदि पर एकत्रित वर्षा के पानी को बर्बाद न करें।

• पारंपरिक जल स्रोतों जैसे तालाबों, एनीकट्स, कुओं, टैंकों आदि के साथ खिलवाड़ न करें।

• ब्रश करने, शेविंग, बर्तन धोने, कपड़े इत्यादि के दौरान बहते पानी का उपयोग न करें।

• किसी भी घरेलू काम के लिए हाथ में नली का उपयोग करने से बचें।

कृषि में सूखे / सूखे के लिए क्या करें और क्या न करें

क्या करें

• वर्षा जल संचयन को कम करना। खेत तालाब, सामुदायिक टैंक, वाटरशेड और पूल जैसे जल संचयन अभ्यास जीवन रक्षक साबित हो सकते हैं।

• बरसात से पहले स्थानीय जल निकायों की मरम्मत और कायाकल्प करना।

- सूखे-प्रतिरोधी / कम पानी की आवश्यकता वाले फसल की किस्मों / पौधों की उपयोग करें।
- मिट्टी की नमी को बचाने के लिए सूखा-सहिष्णु घास, झाड़ियाँ, पेड़ लगाएं।
- सिंचाई के लिए स्प्रिंकलर विधि / ड्रिप इरिगेशन विधि का उपयोग करें; शाम के समय फसलों की सिंचाई करें।
- जल संरक्षण के उपाय करना।
- उपलब्ध जल संसाधनों से सिंचाई सुविधाओं की व्यवस्था करना।
- खेतों से खरपतवार निकाल दें। उन खरपतवारों का इस्तेमाल पानी की कमी से बचने के लिए मल्चिंग के लिए किया जा सकता है। मिट्टी की नमी को संरक्षित करने, खरपतवारों को हटाने और मिट्टी की सतह की पपड़ी को तोड़ने के लिए मिट्टी की धूल को गीली घास बनाने के लिए कुदाल या इंटरकल्चरल ऑपरेशन करें।
- मानसून / मौसम के देर से शुरू होने की स्थिति में आकस्मिक फसल तैयार करें, जो मौसम के दौरान उपयुक्त फसलें हों।
- कम अवधि के साथ फसलें और सूखाग्रस्त क्षेत्रों में अपेक्षाकृत कम पानी की आवश्यकता होती है; कम अवधि वाले बीजों की उपलब्धता की व्यवस्था करें।
- तत्काल वितरण के लिए, अच्छी गुणवत्ता वाले बीजों की स्टॉकिंग की व्यवस्था करें।
- किसान मल्चिंग, खरपतवार नियंत्रण, इंटरकल्चरल ऑपरेशन आदि जैसी प्रथाओं को चुन सकते हैं।
- सुबबुल, सीमारूबा, कैसुरिना और नीलगिरी के साथ वनीकरण को प्रोत्साहित करें।
- गुणवत्ता वाले चारा और पशु शिविरों की उपलब्धता सुनिश्चित करें।
- चूसने वाले कीटों के नियंत्रण का ध्यान रखें; आईपीएम के साथ कीट और कीट की घटनाओं को नियंत्रित / कम करना।
- किसानों को फसल बीमा के लिए प्रोत्साहित करना, चाहे वे ऋणी हों या न हों।
- शुष्क स्पंदनों के दौरान नाइट्रोजन उर्वरकों और सूक्ष्म पोषक तत्वों का पर्ण छिड़काव, सूखे की स्थिति में फसल की रक्षा और सुधार करता है।
- कपास की तरह चौड़ी पंक्ति की फसलों में पंक्ति सिंचाई को अपनाना।
- मिट्टी से नमी के वाष्पोत्सर्जन नुकसान को कम करने के लिए पौधे की आबादी को कम करें।
- जहां कहीं भी आवश्यक हो, कैओलिन (6%), साइकोसेल (0.03%), फेनिल मरक्यूरिक एसिड (पीएमए) जैसे एंटीट्रांसपिरेंट्स का स्प्रे।

• उर्वरक की खुराक कम हो सकती है या इसके आवेदन में देरी हो सकती है।

• पानी और शीर्ष मिट्टी के अपवाह नुकसान को रोकने के लिए फील्ड लेवलिंग, बन्डिंग, ट्रेन्चिंग, टैरेसिंग और परती जुताई जैसी इंसेटिव प्रैक्टिस।

<u>क्या न करें</u>

• उच्च पानी की आवश्यकता वाले बीज / फसलों का उपयोग न करें; सुबह के समय फसलों की सिंचाई न करें।